शिवाजी के अभिशप्त मानसपुत्र

लेखक – अनिल चावला

जाणता राजा –– छत्रपति शिवाजी के जीवन पर रचा गया एक भव्य नाटक, जो शिवाजी के जन्म से प्रारंभ हो कर उनके राज्याभिषेक पर समाप्त हो जाता है। नाटक के रचयिता बाबासाहेब पुरंदरे का इस प्रकार पटाक्षेप करने का निर्णय कुछ दर्शकों को अटपटा लगा पर सत्य यह है कि छः जून १६७४ को शिवाजी के राज्याभिषेक के साथ ही उनके सूर्यास्त की भूमिका प्रारंभ हो गयी थी। लगभग छः वर्ष पश्चात ३ अप्रैल १६८० को जब उन्होंने देह त्यागी तब तक वह सब घटित हो चुका था जिसके कारण बाद में मराठों का पतन हुआ।

राज्याभिषेक के साथ पटाक्षेप – यह छत्रपति शिवाजी की ही नहीं, आधुनिक युग के उनके मानसपुत्रों अर्थात हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा को समर्पित संगठनों की भी नियति है। चाहे भाजपा हो या शिवसेना – कोई भी इसका अपवाद नहीं है। शायद इसका एक कारण यह है कि हम भारतीय अपने महापुरुषों को महिमामंडित करते हुए साक्षात भगवान बना देते हैं और उनकी गलतियों के बारे में न तो सुनना पसंद करते हैं, न सोचना। हिन्दू संगठनों ने भी शिवाजी को भगवान बना दिया है। परिणामस्वरूप वे उन सभी गलतियों को दोहराने को अभिशप्त है जिनके कारण मराठों का सूर्य उदित होते ही अस्त हो गया। आज आवश्यकता शिवाजी के जीवन से प्रेरणा लेने की उतनी नहीं है, जितनी उनके जीवन की गलतियों एवं विफलताओं से शिक्षा लेने की है।

© All Rights Free May 2005
Author- Anil Chawla

जाणता राजा नाटक में शिवाजी का परिवार

शिवाजी ने कुल दस विवाह किए। १६७४ में, राज्याभिषेक के समय, उनके दो पुत्र तथा छः पुत्रियाँ थीं। उस समय ज्येष्ठ पुत्र संभाजीराजे की माता का देहांत हो चुका था तथा संभाजी की सौतेली माता सोयराबाईसाहेब महारानी के पद पर आसीन थी। संभाजीराजे युवराज थे। संभाजीराजे तथा महारानी के बीच लगातार खटपट चलती रहती थी। इस खटपट से खिन्न हो कर संभाजीराजे १३ दिसम्बर १६७८ को मुगल सरदार दिलेरखान के खेमे में रहने चले गये। संभाजीराजे गद्दार हो गये पर पुत्रमोह से ग्रसित शिवाजी ने उन्हें युवराज के पद से नहीं हटाया।

लगभग अठारह वर्ष पूर्व १६६० में खंडोजी खोपड़े ने गद्दारी कर भेदिये के रूप में अफजलखान की सहायता की थी। खंडोजी ने मृत्युदण्ड से बचने के लिए शिवाजी के निकटस्थ कान्होजी जेधे से अपनी सिफारिश कराई। सिफारिश बहुत जोरदार थी अतः शिवाजी ने खंडोजी की जान बख्श दी। पर उसके तुरंत बाद जब खंडोजी शिवाजी के सम्मान में शीष नवाने को प्रस्तुत हुआ तो शिवाजी ने उसे गिरफ्तार कर उसका दायाँ हाथ और बायाँ पाँव काटने काट देने का आदेश दिया। कान्होजी हतप्रभ हो कर शिवाजी के सामने विरोध प्रकट करने आए तो शिवाजी ने न्याय की दुहाई दी और कहा कि सिफारिश अथवा उच्च पदस्थ लोगों से रिश्तेदारी या पाश्चाताप प्रकट करने से गंभीर अपराध क्षम्य नहीं हो जाता।

न्यायशास्त्र का यह मूलभूत सिद्धांत खंडोजी के समय तो शिवाजी को याद रहा पर संभाजी के समय वह इसे भूल गये। संभाजी को साथ लेकर दिलेर खान ने मराठा राज्य के भूपालगढ़ पर आक्रमण किया। सोलह दिनों (१ से १६ अप्रैल १६७६) तक भूपालगढ़ का किलेदार फिरंगोजी नरसाला बहादुरी से लड़ा। सत्रहवें दिन संभाजी ने दिलेर खान की फौज का नेतृत्व किया तथा फिरंगोजी को किला सौंप

देने का आदेश दिया। फिरंगोजी ने अपने राज्य के युवराज के आदेश का सम्मान किया, किले का दरवाजा खोल दिया तथा दूसरे दरवाजे से राजगढ़ भाग गया। राजगढ़ में महाराज ने फिरंगोजी को दोष दिया। कहा कि युवराज पर बम गिराना चाहिए था। पर अब भी उन्होंने संभाजी को युवराज के पद से नहीं हटाया। भूपालगढ़ में दिलेर खान ने सात सौ मराठों के हाथ बेरहमी से तोड़े और इस अत्याचार के लिए जिम्मेदार संभाजी, दिलेर खान की छावनी में रहते हुए भी मराठा युवराज बना हुआ था।

भूपालगढ़ के बाद दिलेरखान ने संभाजीराजे की मदद से वीजापुर तथा तिखोटे पर आक्रमण किया। तिखोटे में दिलेरखान ने खूब अत्याचार किया। अत्याचार के भय से कई औरतें बाल–बच्चों के साथ कुओं में कूद पड़ी। इन सबको देखकर भी संभाजी मुगल वैभव का भोग करते रहे।

औरंगजेब को जब यह पता चला कि दिलेर खान के कब्जे में मराठा युवराज है तो उसने दिलेर खान को गुप्त संदेश भेजा कि संभाजी को दिल्ली लाया जाए। इस संदेश की भनक संभाजी को मिली तो वह जान बचाकर भाग खड़े हुए। भागकर पहले वीजापुर पहुँचे और फिर ३० नवंबर १६७६ को पन्हाला पहुँचे। मुगलों के साथ मिलकर साढ़े ग्यारह माह तक मराठों पर कहर ढाने वाले इस गद्दार का स्वागत करने स्वयं छत्रपति शिवाजी पन्हाला पहुँचे। युवराज सिर झुकाकर खड़े हो गये और महाराज ने उन्हें तत्काल क्षमा कर दिया। निश्चय ही संभाजी का अपराध खंडोजी के अपराध से कहीं अधिक गंभीर था। परन्तु न्यायशास्त्र का जो उपदेश शिवाजी ने खंडोजी के संदर्भ में कान्होजी जेधे को दिया था, उसे स्वयं शिवाजी उन्नीस वर्षों में भूल गये थे। हजारों मराठों के खून से रंगे संभाजी राजे को मृत्युदण्ड या अंगभंग तो दूर, कोई प्रायश्चित या सार्वजनिक क्षमायाचना भी नहीं करनी पड़ी। मात्र चार माह पश्चात शिवाजी का देहान्त हुआ और संभाजी अपने रक्तरंजित हाथों के साथ ही मराठा सम्राट बन गए। संभाजी सम्राट तो बने पर साम्राज्य को संभाल नहीं सके। मराठा साम्राज्य का जितनी तेजी से उदय हुआ था, उतनी ही तेजी से वह अस्त भी हो गया।

मोहग्रस्त होकर न्याय के मूलभूत सिद्धांतों को ताक पर रखने के कारण शिवाजी ने दशकों के कठोर श्रम से अर्जित किये नैतिक बल को खो दिया। नैतिक बल एवं अधिकार समाप्त होने के बाद उच्चपदासीन व्यक्ति खोखला हो जाता है। अधीनस्थ उसकी आज्ञा का पालन मजबूरी में तो करते हैं, निष्ठाभाव या दिल से नहीं करते तथा मौका मिलने पर अवज्ञा करने से कतई नहीं चूकते। शिवाजी के प्रारंभिक वर्षों में उनके सभी सहयोगियों ने हृदय से उनका साथ दिया था इसीलिए प्रत्येक दिशा में विपरीत परिस्थितियों में भी विजयश्री ने उनके कदम चूमे। उस समय वे मोह से नहीं न्याय से संचालित थे। बाद में जैसे–जैसे न्याय के ऊपर मोह हावी होने लगा, उनकी आभा क्षीण होने लगी। मात्र पचास वर्षों की आयु में देह त्याग देने के कारण आभाहीनता का लंबा अनुभव नहीं करना पड़। परन्तु न्याय पर मोह के हावी होने की जो परंपरा शिवाजी के द्वारा प्रारंभ की गयी, वह उनके देहावसान के पश्चात अधिक बलवती हुई, जिससे मराठा साम्राज्य बहुत शीघ्र गर्त में चला गया।

राज्याभिषेक के साथ ही पटाक्षेप के प्रारंभ की यही कथा भारतीय जनता पार्टी एवं शिव सेना के संदर्भ में भी दिखाई देती है। आधुनिक युग की इस गाथा के पीछे भी न्याय पर मोह की विजय के अनगिनत प्रसंग हैं। केन्द्र सरकार की बागडोर संभालने के पूर्व अटलबिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी एवं

बाल ठाकरे पर कोई उंगली नहीं उठा नहीं सकता था। चरित्र, आाचरण, कृत्य – हर दष्टि से तीनों, उनके समर्थकों ही नहीं जन–जन की दष्टि में दागविहीन थे। उनके सिद्धांतों, दर्शन या विचारधारा से आप सहमत या असहमत हो सकते थे परन्तु उनके व्यक्तित्व एवं जीवन की कोई आलोचना संभव नहीं थी। मात्र छः–सात वर्षों में सब कुछ बदल गया है। अब तीनों में से कोई भी उस भगवानतुल्य स्थान पर आसीन नहीं है। उस उच्चासन से नीचे आने के पीछे तीनों के अपने–अपने मोहपाश हैं। आज देश का हर प्रबुद्ध नागरिक जानता है कि वाजपेयी के दत्तक दामाद, आडवाणी की पुत्री तथा बाल ठाकरे के परिवारजनों के फलते–फूलते व्यवसायों के पीछे छिपा सत्य क्या है।

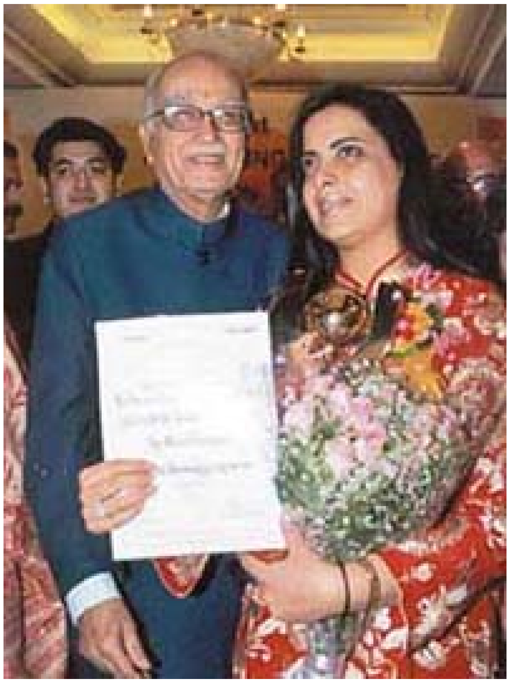

मोह के बंधन केवल पुत्र–पुत्री–दामाद–भतीजों तक सीमित नहीं होते। पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं में से कुछ ही नेताओं के निकट पहुँचने में सफल हो पाते हैं। अपनी सेवा, चापलूसी या अन्य ऐसे ही विशिष्ट गुणों के कारण कुछ कार्यकर्ता नेताओं को प्रसन्न कर उनके कृपापात्र बन जाते हैं। कृपापात्रों से मोह हो जाना स्वाभाविक ही है। एक बार मोह हो जाए तो न्याय की कौन परवाह करे। योग्य–अयोग्य, उचित–अनुचित, न्याय–अन्याय –– इन सब से बढ़ कर जब यह हो जाए कि यह व्यक्ति मेरा है और यह व्यक्ति उसका तो साम्राज्य का पतन हो जाता है, राजनैतिक दल जैसे कमजोर संगठनों की तो बात ही क्या है।

भाजपा, शिव सेना, संघ परिवार –– प्रत्येक हिन्दू संगठन की आज कमोबेश एक ही स्थिति है। मोहपाश तथा मेरा–तेरा के संबंधों से ही इन संगठनों का ताना–बाना गुथा हुआ है। योग्यता, प्रतिभा, परिश्रम, लगन, लोकप्रियता, विद्वता शब्द इन संगठनों में बेमानी हो गये हैं।

भारतीय जनता पार्टी की मध्यप्रदेश इकाई का उदाहरण देना उपयुक्त होगा। जो व्यक्ति पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष का चुनाव भारी बहुमत से हारा, वह कल तक पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष था, और आज पार्टी की प्रदेश इकाई का प्रभारी है। एक अन्य महानुभाव जो प्रदेशाध्यक्ष का चुनाव बुरी तरह हारे थे, वे आज प्रदेश इकाई के अध्यक्ष हैं। इन सबसे भी बढ़कर वर्तमान मुख्यमंत्री हैं, जो कुछ वर्ष पूर्व नेता प्रतिपक्ष के चुनाव में मात्र नौ मत प्राप्त कर मुँह छिपा कर भागे थे।

सत्य यह है कि जीतने वाला, योग्य, प्रतिभावान, लोकप्रिय व्यक्ति कमर सीधी कर के चलता है और हारा हुआ नकारा व्यक्ति मेरुदण्डविहीन हो तलवे चाटने को प्रस्तुत हो जाता है। स्वाभिमानी वीर पुरुष से मोह नहीं होता, पर पूँछ हिलाने वाले, तलवे चाटने वाले से मोह हो जाता है। मोह के आधार पर जब पद बाँटे जाते हैं तो यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि किस प्रकार के व्यक्तियों को उच्च पद प्राप्त होते हैं। योग्यता की चिन्ता किए बिना केवल मोह के आधार पर जब युवराज नियुक्त किया जाता है तो उसके अपराधों को नजरअंदाज करना ही पड़ता है। अपने प्रिय के हजार खून माफ और साधारण कार्यकर्ता / सिपाही की छोटी सी गद्दारी पर भी अंगभंग अथवा मृत्युदण्ड — शिवाजी की इस विकृत व्यवस्था को बहुत वफादारी से आज के हिन्दू नेता भी निभा रहे हैं।

शिवाजी के राज्याभिषेक से जुड़ी एक बात और है जिसकी छाया आज तक भी देखी जा सकती है। समर्थ रामदास को शिवाजी के गुरु के रूप में जाना जाता है। मात्र एक लंगोट धारण करने वाले गुरु समर्थ रामदास गाँवों में, वनों में, दुर्गम क्षेत्रों में घूम–घूम कर जन–जन में जागृति की अलख जगाते थे। वे किसी राजा के राजपुरोहित नहीं थे। न ही उन्हें किसी राजाश्रय की चाह थी। वे तो जन–जन को पराक्रमी, समर्थवान होने का संदेश देते थे। शिवाजी भी उनसे प्रेरित हुए। शिवाजी को जाणता राजा अर्थात सर्वज्ञ राजा की उपाधि गुरु समर्थ रामदास ने ही दी थी। गुरु समर्थ रामदास ने शिवाजी को समर्थन दिया, उनकी प्रशंसा की क्योंकि शिवाजी का अभियान गुरु समर्थ रामदास के सिद्धांतों को समर्पित था। यह अभियान जन को सशक्त बनाने का प्रयास था, एक नयी राजशाही स्थापित कर एक परिवार की सुख–सुविधा एवं ऐश–ओ–आराम की व्यवस्था करने हेतु कतई नहीं था।

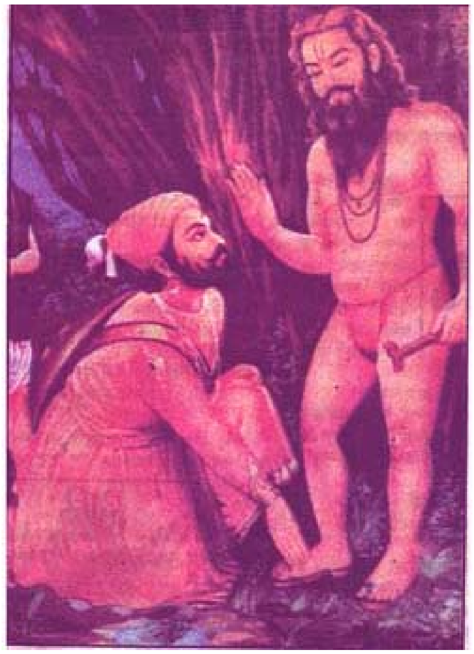

परन्तु जैसे–जैसे अभियान में सफलता मिलती गयी, गुरु समर्थ रामदास अप्रासंगिक होते चले गये। उनका स्थान लिया वाराणसी से आए गागाभट्ट ने। गागाभट्ट की कई पीढ़ियाँ राजपरिवारों की सेवा करती आई थी। वे राजसिक तौर–तरीकों को भली–भाँति जानते थे। मात्र एक लंगोट बाँध, कमण्डल हाथ में लेकर सामान्य जन में स्वाभिमान एवं ज्ञान की अलख जगाना गागाभट्ट की प्रकृति के विपरीत था। आडम्बर, अलंकार, कर्मकाण्ड के साथ अपने शास्त्रों के ज्ञान को अभिमिश्रित कर वे एक ऐसा मायाजाल रचने के विशेषज्ञ थे, जिससे राजा को अपनी दिव्यता का आभास होने लगे। इस मायावी संसार में विचरण करते हुए राजा जनकल्याण को भुला कर कर्मकाण्ड को धर्म समझने लगता है। अपनी दिव्यता के झूठे नशे में डूबा राजा शाश्वत सनातन न्याय को भूल अपने अहंभाव, मोहपाश तथा स्वार्थों से उपजी प्रत्येक इच्छा को राजाज्ञा का चोगा पहना कर न्याय के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

गुरु समर्थ रामदास ने जब शिवाजी को जाणता राजा के रूप में संबोधित किया था तो गुरु उन्हें जन–जन की पीड़ा को जानने एवं समझने का संदेश भी दे रहे थे। गुरु द्वारा दिखाया यह पथ कठोर है, कंटीला भी है। दूसरी ओर इसके विपरीत मखमली सुंदरता लिए गागाभट्ट का मायालोक है। दुर्भाग्य यह है कि शनैः शनैः शिवाजी गुरु समर्थ रामदास से दूर होते गये और गागाभट्ट के मायाजाल में उलझते चले गये।

भव्य राज्याभिषेक, सोने का जड़ाऊ सिहांसन, सोने का डंडा लिए वेत्रधारक, सोने के भाले पर सोने का तराजू, सोने की मूठ वाले मोरपंखों के पंखे, प्रशस्ति गीत गाते चारण — यह सब गागाभट्ट का रचा मायाजाल ही तो था। हाथ में नंगी तलवार लेकर रात के अंधेरे में मात्र मुट्ठी भर सहयोगियों के साथ मुगलों की विराट छावनी में घुसने वाला साहसी युवक अब बदल चुका था।

आज के संदर्भ में कहें तो धूल भरे मैदान में हर सुबह शाखा लगाने वाला युवक अब पाँच एवं सात सितारा होटलों में बैठकें करने में व्यस्त हो गया। मात्र दस वर्ष पूर्व लालकृष्ण आडवाणी रेल के एसी द्वितीय श्रेणी में सहर्ष यात्रा करते थे। अभी एक कार्यक्रम हेतु भोपाल आए तो चार्टर विमान लेकर। कार्यक्रम छोटा सा था। मात्र एक व्यक्ति की यात्रा पर लाखों खर्च हो गये। इस धन की व्यवस्था करना शायद आज भाजपा के लिए बाएँ हाथ का खेल है। पर प्रश्न केवल धन की व्यवस्था का नहीं है, प्रश्न एक जीवनशैली का है। जब आडवाणी एवं वाजपेयी रेल से यात्रा करने में परहेज करने लगते हैं तथा निजी विमान से यात्रा करते हैं, तो यह संस्कृति पूरी पार्टी में व्याप्त हो जाती है। एक समय था जब संघ परिवार के प्रत्येक संगठन के सर्वोच्च अधिकारी भी सामूहिक भोजन के बाद अपनी थाली खुद धोया करते थे। तब संघ परिवार में गुरु समर्थ रामदास का बोलबाला था, अब गागाभट्ट की तूती बोलती है। अब भाजपा हो या संघ परिवार, ऐसे लोगों की पूछपरख है जो पाँच एवं सात सितारा संस्कृति के मायाजाल के विशेषज्ञ हों। लगन, परिश्रम, साहस, विद्वता, बुद्धिमता इत्यादि का दम भरने वाले तो नेपथ्य में बैठे अपने भाग्य को कोसते हैं।

गुरु समर्थ रामदास अशक्त से अशक्त व्यक्ति को भी समर्थ बनाते हैं तथा गागाभट्ट के मायाजाल में उलझ कर विशाल मराठा साम्राज्य धूल में मिल गया। पर फिर भी गागाभट्ट के मायावी संसार की चकाचौंध आकर्षित करती है। यही कारण है कि सत्तासीन होते ही भाजपा, संघ परिवार एवं शिव सेना गागाभट्ट के मार्ग पर चलने लगे तथा गुरु समर्थ रामदास को भूल गये।

अभी कुछ समय पूर्व संघ परिवार के सक्रिय सहयोग से भोपाल में **जाणता राजा** का भव्य मंचन किया गया। तीन घंटे के आलीशान नाटक में गुरु समर्थ रामदास का नाम तक नहीं लिया गया तथा गागाभट्ट की खूब प्रशंसा की गयी। ठीक भी है। आज संघ परिवार में गुरु समर्थ रामदास के मार्ग पर चलने

वालों का कोई स्थान नहीं है। आज तो ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो गागाभट्ट की तर्ज पर राज्याभिषेक का चमचमाता आयोजन करवा सकें। समर्थ रामदास की दूरदृष्टि को निरर्थक माना जाने लगा है राज्याभिषेक की लालसा, राजसिक सुखों की चाह तथा ऐश्वर्य की प्यास इतनी बलवती हो गयी है कि पटाक्षेप की चिन्ता करने की किसी को फुरसत नहीं है।

राज्याभिषेक के साथ ही पटाक्षेप छत्रपति शिवाजी के जीवन में हुआ और वर्तमान युग में उनके मानसपुत्रों अर्थात हिन्दू राष्ट्रवादी विचारधारा को समर्पित संगठनों में भी। हमें यह सोचना होगा कि क्या कारण है कि समर्थ रामदास का तेजस्वी शिष्य एक ओर तो मोह से ग्रसित हो कर न्याय का दामन छोड़ देता है तथा दूसरी ओर गागाभट्ट के मायाजाल में फंस कर तेजविहीन हो जाता है। जब तक इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता, शिवाजी के मानसपुत्र हर काल में राज्याभिषेक के साथ ही पटाक्षेप झेलने को अभिशप्त रहेंगे।

अनिल चावला

मई २००५

E-mail: hindustanstudies@gmail.com
hindustanstudies@rediffmail.com
hindustanstudies@yahoo.co.in
indialegalhelp@yahoo.co.in

Websites: www.samarthbharat.com
www.hindustanstudies.com
www.indialegalhelp.com

उपसंहार

मुझसे यह प्रश्न बार–बार पूछा जाता है कि मैं भाजपा, संघ परिवार इत्यादि के बारे में ही क्यों लिखता हूँ। अन्य भारतीय राजनैतिक दलों के बारे में मेरे मौन को लेकर कई मित्रों ने प्रश्न उठाए हैं। इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि जहाँ प्रेम होता है वहीं अपेक्षा भी होती है तथा आशा भी। अपने पुत्र की छोटी सी गलती पर भी व्यक्ति आगबबूला हो जाता है, जब कि दूसरी गली में कल्लू यदि शराब के नशे में धुत घर लौटता है तो भी माथे पर एक शिकन तक नहीं आती।

भारतीय राजनैतिक परिदृश्य पर यदि एक नजर डालें तो अनेको ऐसे दल हैं जो किसी नेता–विशेष के जेबी संगठन हैं। किसी विचारधारा से जुड़े या तो वामपंथी हैं या वे सब जिन्हें हिन्दूवादी या राष्ट्रवादी कहा जाता है। काँग्रेस एक ऐसा मध्यममार्गी जमावड़ा है जिसकी विचारधारा के बारे में कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है। कम्युनिजम अर्थात वामपंथ के अस्त होने के पश्चात भारतीय मानस की आशा का एकमात्र केन्द्रबिन्दु संघ परिवार या भाजपा था। पिछले दशक में इस आशा के धूमिल होने पर भारतीय मानस उलझन की स्थिति में है।

भारतीय मानस की इस उलझनपूर्ण स्थिति का मैं भुक्तभोगी हूँ। पर एक विचारक के रूप में मैं इसे अपना कर्त्तव्य मानता हूँ कि आज की तथा आने वाली पीढ़ी के लिए यह विशलेषण करूँ कि वह क्या कमियाँ हैं और थीं, जिनके कारण हमारी पीढ़ी की आशा निराशा में परिवर्तित हो गयी। उपरोक्त लेख मेरे इसी कर्त्तव्यबोध से उपजा एक छोटा सा प्रयास है। आशा करता हूँ कि आप इसके पीछे छिपी भावनाओं को समझ कर आशीर्वाद देंगे।

अनिल चावला